अमर उजाला

'तंगी से जूझ रहा गन्ना किसान व चीनी उद्योग'

आईआईएसआर निदेशक बोले, कम क्षेत्रफल में अधिक उत्पादन के बिना नहीं सुधरेंगे हालात

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। 'करीब पांच करोड़ किसान। 53 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में गन्ने की खेती। 65 टन/हेक्टेयर की उत्पादकता। 3500 लाख टन गन्ने का उत्पादन। 525 चीनी मिलें। 2.50 करोड़ टन चीनी का उत्पादन। देश में इतने व्यापक आंकड़ों के बाद भी गन्ना किसान और चीनी उद्योग आर्थिक तंगी से जूझ रहा है।'

15 दिवसीय किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ सुगर केन रिसर्च (आईआईएसआर) के निदेशक डॉ. ओके सिन्हा ने बुधवार को यह सवाल उठाया। वह बुधवार से शुरू हुए 15 दिवसीय किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम में बोल रहे थे। उनका कहना था कि वृहद स्तर पर गन्ना उत्पादन और चीनी उद्योग का काम हो रहा है। इसके बाद भी आर्थिक हालात अच्छे नहीं हैं। उनका कहना था कि जब तक कम क्षेत्रफल में अधिक उत्पादन सुनिश्चित नहीं किया जाएगा। दोनों को ही आर्थिक लाभ नहीं होगा।

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ सुगर केन रिसर्च (आईआईएसआर) के बुधवार से शुरू हुए 15 दिवसीय किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान 'तंगी से जूझ रहा गन्ना किसान व चीनी उद्योग' पर चर्चा हुई।

डॉ. सिन्हा ने बताया कि खराब मृदा स्वास्थ्य, बढ़ती गन्ना उत्पादन की लागत, गुणवत्ता वाले गन्ना बीज की कमी और श्रमिकों की उपलब्धता का अभाव बड़ा मुद्दा बन रहा है।

अगर इनका हल निकालना हो तो यह केवल नई विकसित तकनीकों के उपयोग से ही संभव है। उनका कहना था कि पिछले सालों में सरकार की उदार चीनी नीतियों के कारण नई चीनी मिलें खुलीं। इससे चीनी मिलों के एरिया में गन्ना क्षेत्रफल में कमी आई है। अब इन मिलों के ऊपर पेराई क्षमता पर चलाने के लिए कम गन्ना क्षेत्रफल में अधिक गन्ना उत्पादन का दबाव है। उन्होंने चीनी मिलों को ऊर्जा प्रसंस्करण प्रक्षेत्र में बदलने की भी जरूरत बताई। इससे चीनी मिलों की आय में बढ़ोतरी होगी। कार्यक्रम में राष्ट्रीय प्रशिक्षण प्रभारी और प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एके साह ने कि सानों और गन्ना विकास अधिकारियों को नई तकनीकों की जानकारी दी।

www.samaylive.com
राष्ट्रीय सहारा
सच कहने की हिम्मत
राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण
• देहरादून • वाराणसी से प्रकाशित
लखनऊ | बृहस्पतिवार • 2 जुलाई • 2015

किसान व चीनी उद्योग की खुशहाली के लिए गन्ना उत्पादन बढ़ना जरूरी

लखनऊ (एसएनबी)। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. ओके सिन्हा ने कहा कि देश में लगभग पांच करोड़ किसान 53 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में गन्ने की खेती कर 65 टन प्रति हेक्टेयर की उत्पादकता दर से 3500 लाख टन गन्ने का उत्पादन कर रहे हैं। इसके साथ ही देश में 525 चीनी मिलें गन्ने की पेराई कर लगभग 250 लाख टन चीनी का उत्पादन किया जा रहा है। इतने वृहद स्तर पर गन्ना व चीनी उद्योग का कार्य होने के बावजूद किसान व उद्योग दोनों आर्थिक तंगी के दौर से गुजर रहा है। खराब मृदा स्वास्थ्य, बढ़ती गन्ना उत्पादन लागत, गुणवत्ता पूर्ण गन्ना बीज की कमी तथा श्रमिकों का अभाव चिंता का विषय है। इन सभी समस्याओं का समाधान संस्थान की ओर से विकसित तकनीकों के प्रयोग से संभव है।

■ 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

डा. सिन्हा बुधवार को संस्थान के तत्वावधान में शुरू हुए 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। डा. सिन्हा ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में सरकार की ओर से निर्धारित उदार चीनी नीतियों के कारण कई नई चीनी मिलें देश में लगायी गयी हैं। इसके कारण चीनी मिलों के अन्तर्गत गन्ना क्षेत्रफल में कमी आयी है। इस चलते मिलों को स्थापित गन्ना पेराई क्षमता पर चलाने के लिए कम गन्ना क्षेत्रफल से अधिक गन्ना उत्पादन कराने की आवश्यकता होगी और यह आधुनिक व उन्नत उत्पादन तकनीक को अपनाकर ही प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए गन्ना किसानों को उन्नत गन्ना उत्पादक तकनीक प्रयोग करने के लिए जागरूक व प्रेरित करना पड़ेगा, जिसमें चीनी मिलों में कार्यरत गन्ना विकास अधिकारियों की भूमिका अहम है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ की ओर से 15 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण का आयोजन पहली जुलाई से 15 जुलाई तक संस्थान परिसर में किया जा रहा है।

इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य मिल अधिकारियों को गन्ना प्रबंधन एवं उत्पादन के विभिन्न विषयों पर आधुनिक व वैज्ञानिक जानकारी प्रदान कर उन्हें अधिक सक्षम, शिक्षित एवं बौद्धिक रूप से मजबूत किया जाना है। डा. सिन्हा ने कहा कि आज के वर्तमान संदर्भ में सभी चीनी मिलों को ऊर्जा प्रसंस्करण प्रक्षेत्र में भी जुड़ना पड़ेगा जिससे चीनी मिलों की आमदनी बढ़ेगी।

इस प्रशिक्षण के माध्यम से तीन मुख्य चुनौतियों जैसे उपज में बढ़ोतरी, चीनी का अधिक उत्पादन तथा गन्ना उत्पादन लागत में कमी गन्ना व चीनी उद्योग के समक्ष है जिसको ध्यान में रखते हुए इस प्रशिक्षण को क्रियान्वित किया जा रहा है। राष्ट्रीय प्रशिक्षण प्रभारी व संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डा. एके साह के अनुसार इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में गन्ना उत्पादन के विभिन्न पहलुओं जैसे प्रजाति नियोजन, बीज उत्पादन, आधुनिक बोआई विधियां, पोषक तत्व प्रबंधन एवं मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, जैविक विधि से नाशी कीट व बीमारी प्रबंधन, सूखा व जलभराव प्रतिरोधी तकनीक, गन्ना मशीन, पेड़ी प्रबंधन, पोस्ट-हार्वेस्ट प्रबंधन, गन्ना विपणन व आय-व्यय आकलन इत्यादि पर आधुनिक जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को दी जाएंगी। इस प्रशिक्षण में उत्तर भारत के 14 चीनी मिलों के 16 गन्ना विकास अधिकारी भाग ले रहे हैं।

जनसंदेश टाइम्स
लखनऊ, गुरुवार, 2 जुलाई, 2015

सुधरेगी गन्ना किसानों की दशा

लखनऊ। देश में लगभग 5 करोड़ किसान 53 लाख हेक्टेयर में गन्ने की खेती कर 65 टन उत्पादकता की दर से 3500 लाख टन गन्ने का उत्पादन कर रहे है। 525 चीनी मिलें गन्ने की पेराई कर लगभग 250 लाख टन चीनी का उत्पादन कर रहा है। इतने वृहत स्तर पर गन्ना व चीनी उद्योग का काम होने के बावजूद किसान व उद्योग दोनों आर्थिक तंगी के दौर से गुजर रहा है। खराब मृदा स्वस्थ्य, बढ़ता गन्ना उत्पादन लागत, गुणवत्ता पूर्ण गन्ना बीज की कमी तथा श्रमिकों का अभाव चिंता का विषय है। इन सभी समस्याओं का समाधान संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों के प्रयोग से संभव है।

शुरुआत

देशहित में गन्ना व चीनी उत्पादन बढ़ाना जरूरी

चीनी मिलों को ऊर्जा प्रसंस्करण प्रक्षेत्र में बदलना होगा

यह बात बुधवार को आइआइएसआर में पन्द्रह दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक डा. ओ के सिन्हा ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कही। उन्होंने कहा कि कम गन्ना क्षेफल से अधिक गन्ना उत्पादन करने की आवश्यकता होगी और यह आधुनिक व उन्नत उत्पादन तकनीक को अपनाकर प्राप्त किया जा सकता है । इसके लिए गन्ना किसानों को उन्नत गन्ना उत्पादक तकनीक प्रयोग करने के लिए जागरूक व प्रेरित करना पड़ेगा, जिसमें चीनी मिलों में कार्यरत गन्ना विकास अधिकारियों की भूमिका अहम है।

इस मौके पर प्रधान वैज्ञानिक डा. ए के साह ने बताया कि गन्ना उत्पादन के विभिन्न पहलुओं जैसे प्रजाति नियोजन, बीज उत्पादन, आधुनिक बुवाई विधियाँ, पोषक तत्व प्रबंधन, एवं मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, जैविक विधि द्वारा नाशी कीट व बीमारी प्रबंधन, सूखा व जलभराव प्रतिरोधी तकनीक, गन्ना मशीन, पेड़ी प्रबंधन, जलवायु लचनशील गन्ना कृषि, पोस्ट-हार्वेस्ट प्रबंधन, गन्ना विपणन व आय-व्यय आंकलन इत्यादि पर आधुनिक जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को दिया जाएगा।

आइआइएसआर में गन्ना किसान और गन्ना अधिकारियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम को सम्बोधित करते निदेशक ओ के सिन्हा और डॉ. ए के साह

इससे पूर्व प्रशिक्षण का उद्धाटन करते हुए डा. सिन्हा ने कहा कि आज के वर्तमान संदर्भ में सभी चीनी मिलों को ऊर्जा प्रसंस्करण प्रक्षेत्र में बदलना पड़ेगा ,जिससे चीनी मिलों की आमदनी बढ़ेगी। इस प्रशिक्षण के द्वारा चीनी मिलों में किसान के खेतों पर गन्ना उत्पादन में विज्ञान को समाहित करने का प्रयास होगा। तीन मुख्य चुनौतियों जैसे उपज में बढ़ोत्तरी, चीनी का अधिक उत्पादन तथा गन्ना उत्पादन लागत में कमी गन्ना व चीनी उद्योग के समक्ष है जिसको ध्यान में रखते हुए इस प्रशिक्षण को नियोजित तथा क्रियान्वित किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उत्तर भारत के 14 चीनी मिलों के 16 गन्ना विकास अधिकारी इस प्रशिक्षण में भाग ले रहे है। *वसं.*

चीनी मिलों की स्थिति सुधारें

लखनऊ : भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में बुधवार को शुरू हुए 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्‌घाटन सत्र में निदेशक डॉ. ओके सिन्हा ने देश के चीनी उद्योग की स्थिति सुधारने पर जोर दिया। उनका कहना था कि पेराई कर रही कुल 525 चीनी मिलों की आवश्यकता के मुताबिक गन्ना उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। किसानों द्वारा उन्नत तकनीक का इस्तेमाल करके गन्ने की गुणवत्ता व उत्पादन बढ़ाने का गंभीर प्रयास किया जाना चाहिए। इस मौके पर प्रशिक्षण प्रभारी एके साह ने 15 जुलाई तक चलने वाले कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

राष्ट्रीय एकता के प्रति समर्पित

युनाइटेड भारत

लखनऊ, बृहस्पतिवार 02 जुलाई, 2015- मूल्य 2.00 रुपया, पृष्ठ 12

पर्दे पर उेखने
नकली: स्वरा

चीनी उद्योग की खुशहाली के लिए गन्ना व चीनी उत्पादन बढ़ना जरूरी

युनाइटेड समाचार सेवा

लखनऊ १ जुलाई। देश में लगभग पांच करोड़ किसान ५३ लाख हेक्टेयर में गन्ने की खेती कर ६५ टन उत्पादकता की दर से ३५०० लाख टन गन्ने का उत्पादन कर रहे हैं। ५२५ चीनी मिलें गन्ने की पेराई कर लगभग २५० लाख टन चीनी का उत्पादन कर रहा है। वृहत स्तर पर गन्ना व चीनी उद्योग का कार्य है होने के बावजूद किसान व उद्योग दोनों आर्थिक तंगी के दौर से गुजर रहा है। खराब मृदा स्वस्थ्य, बघ्ता गन्ना उत्पादन लागत, गुणवत्ता पूर्ण गन्ना बीज की कमी तथा श्रमिकों का अभाव चिंता का विषय है। इन सभी समस्याओं का समाधान संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों के प्रयोग से संभव है। यह बात १५ दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उदघाटन करते हुये संस्थान के निदेशक डा. ओके सिन्हा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में सरकार द्वारा निर्धारित उदार चीनी नीतियों के कारण कई नई चीनी मिल देश में लगाई गई हैं। जिस कारण चीनी मिलों के अंतर्गत गन्ना क्षेत्रफल में कमी आई है। इस कारण से मिलों को स्थापित गन्ना पेराई क्षमता पर चलाने के लिए कम गन्ना क्षेफल से अधिक गन्ना उत्पादन करने की आवश्यकता होगी, और यह आधुनिक व उन्नत उत्पादन तकनीक को अपनाकर प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए गन्ना किसानों को उन्नत गन्ना उत्पादक तकनीक प्रयोग करने के लिए जागरूक व प्रेरित करना पड़ेगा, जिसमें चीनी मिलों में कार्यरत गन्ना विकास अधिकारियों की भूमिका अहम है। इस प्रशिक्षण का उद्घाटन करते हुए डा० सिन्हा ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि कहा की आज के वर्तमान संदर्भ में सभी चीनी मिलों को ऊर्जा प्रसंस्करण प्रक्षेत्र में बदलना पड़ेगा जिससे चीनी मिलों की आमदनी बढ़ेगी। इस प्रशिक्षण के द्वारा चीनी मिलों में किसान के खेतों पर गन्ना उत्पादन में विज्ञान को समाहित करने का प्रयास होगा।

कल्पतरु एक्सप्रेस

लखनऊ, गुरुवार, 2 जुलाई 2015

'विकसित तकनीक का प्रयोग करें किसान'

कल्पतरु समाचार सेवा

गन्ना संस्थान में शुरु हुआ 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

लखनऊ। देश के लगभग पांच करोड़ किसान 3500 लाख टन गन्ने का उत्पादन कर रहे हैं। देश में कुल 525 चीनी मिलें गन्ने की पेराई कर 250 लाख टन चीनी का उत्पादन कर रही हैं। इतने बड़े स्तर पर चीनी उद्योग स्थापित होने के बाद भी किसान और उद्योग, दोनों आर्थिक तंगी के दौर से गुजर रहे हैं। खराब मृदा स्वास्थ्य, गन्ना उत्पादन लागत वृद्धि, गुणवत्तापूर्ण गन्ना बीज की कमी तथा श्रमिकों की कमी गन्ना किसानों के लिए चिन्ता का विषय है। इन समस्याओं का समाधान विकसित तकनीक के प्रयोग से ही संभव है। ये बातें भारतीय गन्ना अनुसंधान परिषद में संस्थान के निदेशक डॉ. ओके सिन्हा ने बुधवार को 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन के अवसर पर कहीं।

उन्होंने कहा कि गन्ना किसानों को उन्नत गन्ना उत्पादक तकनीक प्रयोग करने के लिए जागरूक व प्रेरित करना पड़ेगा। इसमें चीनी मिलों में कार्यरत गन्ना विकास अधिकारियों की भूमिका अहम है। कार्यक्रम के आयोजन पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य मिल अधिकारियों को गन्ना प्रबंधन एवं उत्पादन के विभिन्न विषयों पर आधुनिक व वैज्ञानिक जानकारी प्रदान कर उन्हें अधिक सक्षम, शिक्षित एवं बौद्धिक रूप से मजबूत बनाना है। राष्ट्रीय प्रशिक्षण प्रभारी व प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एके शाह के अनुसार, इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षुओं को गन्ना उत्पादन के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी जाएगी। कार्यक्रम में 14 चीनी मिलों के 16 गन्ना विकास अधिकारियों ने भाग लिया।